RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र



वर्षः 75, अंक : 44 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 13 जनवरी, 2019

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 44, 10–13 जनवरी 2019 तदनुसार 29 पौष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

## हिंसा-निषेध

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

**प्रेदग्ने ज्योतिष्मान् याहि शिवेभिरर्चिभिष्ट्वम्।**
**बृहद्भिर्भानुभिर्भासन्मा हिꣳसीस्तन्वा प्रजाः।।**

**–यजुऋ० १२।३२**

**शब्दार्थ**–हे **अग्ने** = विद्वन्! ज्ञानिन्! **त्वम्** = तू **बृहद्भिः+भानुभिः** = महान् ज्ञानप्रकाशों से **भासन्** = चमकता हुआ और **शिवेभिः** = कल्याणकारिणी **अर्चिभिः** = किरणों से, ज्वालाओं से, पूजाओं से **ज्योतिष्मान्** = ज्योतिर्मय होता हुआ **इत्** = ही **प्रयाहि** = उत्तम गति प्राप्त कर और **प्रजाः** = प्रजाओं को **तन्वा** = शरीर से **मा** = मत **हिंसीः** = मार।

**व्याख्या**–ज्ञान का फल तो सब में समानता का ज्ञान है। किसी ने कहा भी है–'**आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति**'–सब प्राणियों को जो अपने समान जानता है, वही ज्ञानी है। जब सबको अपने समान जाना और पहचाना, तब किसी को किसी की हत्या करने का साहस कैसे हो सकेगा? क्या कोई वीर है जो दूसरों से उत्पीड़ित होना पसन्द करता है? कोई भी नहीं चाहता कि उसकी कोई हत्या करे, फिर वह दूसरों की हत्या के लिए कैसे प्रवृत्त हो सकता है? नीतिकार कहते हैं–'**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्**'= अपने प्रति विपरीत बातें दूसरों के लिए न करे।

वैदिक जन व्यर्थ की हिंसा कर ही नहीं सकता, क्योंकि उसकी घोषणा है–'**मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे**' [यजुः० ३६।१८]–मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूँ। क्या कोई मित्र मित्र की हत्या कर सकता है? केवल मैं अकेला ही नहीं, प्रत्युत हम सब–'**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे**'= मित्र की दृष्टि से देखें, अर्थात् हम किसी का घात-पात न करें। बुद्धि-भ्रष्ट होने पर हिंसा की प्रवृत्ति होती है। जैसा कि वेद में कहा है–'**यत्र वि जायते यमिन्यपर्तुः सा पशून् क्षिणाति रिफती रुशती**' [अ० ३।२८।१]= जिस अवस्था में बुद्धि विशेष बिगड़ जाती है, तब वह शस्त्राघात से मारती हुई तथा अन्य उपायों से हत्या करती हुई पशुओं को नष्ट करती है।

कई लोग पशुजगत् में हिंसा-मार-काट देखकर हिंसा को प्राकृतिक नियम बतलाते हैं। वे भूल जाते हैं कि वे मनुष्य हैं, पशु नहीं हैं। पशुओं का अनुकरण करने से मनुष्य में पशुपन ही बढ़ेगा। पशुओं में सन्तान को खा जाने की प्रवृत्ति है। क्या मनुष्य यह करने को तैयार है? यदि नहीं तो हिंसा को स्वाभाविक या प्राकृतिक नियम बताना निस्सार है। वेद में '**पशून् पाहि**' [पशुओं की रक्षा कर] का विधान है और '**मा हिंसीः**' तथा '**मा हिꣳसीस्तन्वा प्रजाः**' हिंसानिषेध स्पष्ट है। इन विधि-निषेधों के होते हिंसा को वेदानुमोदित बतलाना वेद के साथ अन्याय करना है।

**(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

## आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर** की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

**प्रेम भारद्वाज**
**महामन्त्री**
**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब**

# ध्यान का स्वरूप तथा विघ्न

ले.-डॉ. रघुवीर वेदालंकार वी-266, सरस्वती विहार, दिल्ली

अनेक व्यक्ति ध्यान करते हैं। यत्र तत्र ध्यान की कक्षाएं भी लगाई जाती हैं। इससे प्रतीत होता है कि ध्यान ऐसी सुलभ क्रिया है जिसे कोई भी व्यक्ति कभी भी लगा सकता है। ऐसी बात नहीं है। वस्तुत: हमारी ध्यान से पूर्वावस्था धारणा ही परिपक्व नहीं होती तो ध्यान कैसे लगेगा? यदि ध्यान लग जाये तो इससे अगला कदम ही समाधि का है। परिपक्व ध्यानी को समाधि दूर नहीं होती। न तो समाधि सबकी लग सकती है तथा न ही ध्यान। पतंजलि मुनि ने ध्यान के 9 विघ्न बतलाये हैं जो इस प्रकार हैं-1. रोग, 2. चित्त की अकर्मण्यता, 3. संशय, 4. प्रमाद, 5. आलस्य, 6. प्रविरति, 7. भ्रान्ति दर्शन अर्थात् विपरीत ज्ञान, 8. अलब्ध भूमिकरण अर्थात् चित्त का एकाग्र तथा निरुद्ध न होना। क्षिप्त, मूढ़ तथा विक्षिप्त चित्त समाधि के लिये सर्वथा अयोग्य है। 9. अनावस्थितत्व अर्थात् चित्त का समाधि की भूमि अवस्था में स्थिर न रहना। ध्यान लगाते समय इन विघ्नों से ऊपर होना ही चाहिये अन्यथा अभीष्ट फल नहीं मिलेगा। आजकल तो क्षिप्त तथा विक्षिप्त चित्त वाले भी ध्यान लगाने बैठ जाते हैं।

दूसरी बात, ध्यान का स्थान योगांगों में सातवां है। इससे आगे बस एक पग है तथा वह है समाधि। हम यह नियम प्राणायाम आदि योग के प्राथमिक अंगों की सर्वथा उपेक्षा करके एकदम ध्यान में पहुंचने का यत्न करने हैं तो ध्यान कैसे लगेगा। पतंजलि कहते हैं कि योग के समस्त अंगों के अनुष्ठान से ही अशुद्धि का क्षय किये बिना ध्यान लग ही नहीं सकता। यह अशुद्धि शरीर तथा मन दोनों प्रकार की है। इनके अतिरिक्त भी ध्यान में मन न लगने के क्या कारण हैं, उनका उल्लेख यहां किया जायेगा।

2. दूसरी बात, भोजन आप कहां बैठकर करते हैं, स्वच्छ स्थान पर? पांच सितारा होटल में हो तो क्या ही बात है। वहां मन प्रसन्न होता है। गन्दे स्थान पर बैठकर आप भोजन नहीं कर सकते। ऐसे ही ध्यान भी कहीं भी बैठकर नहीं किया जाता। एकान्त तथा शुद्ध वातावरण में ही ध्यान लगेगा। भोजन करते समय यदि मांगने वाले आ जायें तो भी आपका ध्यान भोजन से हट जायेगा तथा चाहेंगे कि ये यहां से चले जायें। इसी प्रकार ध्यान करते समय एकान्त होना अति अनिवार्य है। वहां कोई शोर शराबा न हो तो, तभी ध्यान लग पायेगा, अन्यथा नहीं। इस प्रकार एकान्त तथा स्वच्छ वातावरण ध्यान के लिये बहुत आवश्यक है।

3. भूख भी है, वातावरण तथा स्थान भी शान्त एवं शुद्ध है, तब भी सम्भव है कि ध्यान न लगे। किस लिये? इसलिये कि ध्यान में जाने से पूर्व मन में उत्कण्ठा, तीव्र इच्छा भी होनी चाहिये। जैसे भूख तो आपको है, किन्तु किन्हीं आवश्यक कार्यों के कारण उन्हें छोड़कर भोजन नहीं कर सकते, तो ऐसी भूख से भी कोई लाभ नहीं। भोजन के समय सभी कार्यों को छोड़ना ही होगा। इसी प्रकार यदि आप ध्यान का प्रयोग करेंगे तो अवश्य लाभ होगा।

4. निश्चित समय : भर पेट खा लेने पर भी दूसरे समय भूख लग जाती है। यदि कहीं सभा आदि में बैठे हों तो भोजन का समय होते ही घड़ी की ओर निगाह चली जाती है। इसी प्रकार ध्यान के समय का भी नियम है। वह नियमित होना चाहिये। ऐसा नहीं कि आज सात बजे कर लिया तो कल दस बजे। ऐसा करने से समय की निरन्तरता नहीं बनेगी तथा जब समय मिले, तभी ध्यान के लिये बैठ जाने से लाभ नहीं होगा। निश्चित स्थान के समान ध्यान का निश्चित समय भी होना चाहिये। ऐसा होने से वह समय आने से पहले ही आपका ध्यान नित्य किये जाने वाले ध्यान की ओर चला जायेगा।

5. निश्चित समय पर स्वच्छ एवं शान्त वातावरण में ध्यान के लिये बैठे गये तो क्या इतने मात्र से ध्यान लग जायेगा? नहीं, अभी तो बहुत कुछ बाकी है। क्या? आप शान्त वातावरण में शान्ति से भोजन कर रहे हैं, किन्तु तभी नाचने कूदने वाले आपके सामने आ जायें। उनकी कला देखने को आप उत्सुक हो जायें तो या तो भोजन को बीच में ही छोड़ देंगे या अनमने ढंग से शीघ्र शीघ्र समाप्त कर लेंगे क्योंकि इस समय आपका मन उस तमाशे को देखने में है। यही अवस्था ध्यान की है। ध्यान में बैठते ही आपका मन इधर उधर भागने लगेगा। किधर? उधर ही कि जिस कार्य से, जिस वातावरण से आप अभी अभी निकल कर आ रहे हैं। लाभ हानि आदि से युक्त वातावरण से निकलकर यदि हम एकदम ध्यान में बैठ जाते हैं तो ध्यान नहीं लगेगा। इसके लिये आसन ग्रहण करने से पूर्व ही हमें अपनी हानि लाभ की बातों को छोड़ना होगा। अन्यथा आंखें बन्द करके बैठने पर भी मन अपने व्यापार आदि में उलझा रहेगा, ध्यान नहीं लग पायेगा।

6. शुद्ध स्वच्छ स्थान में बैठे निश्चिन्तता से एकान्त में भोजन कर रहे हैं, किन्तु यदि वहां कमरे के अन्दर से ही चींटियां आदि निकलकर शरीर पर चढ़ने लगें तो भी भलीभांति भोजन नहीं कर सकेंगे। यदि अवस्था ध्यान की है। ध्यान करने तो हम बैठ गये, किन्तु मन में ईर्ष्या, द्वेष, दुर्भावना, काम, क्रोध आदि विकारों की एक पूरी फौज खड़ी है, जो ध्यान का प्रारम्भ करते ही सक्रिय हो जाती है। इसके सक्रिय होते ही मन में तरह तरह के विचार, तरह तरह के दुर्विचार सक्रिय हो जाते हैं। अब तक मन में ये प्रसुप्त की दशा में थे। जिस प्रकार बिल में पानी डालते ही उसमें रहने वाला मूषक आदि प्राणी बिल से बाहर निकल आता है, उसी प्रकार ध्यान का मृदु तथा शीतल साथ पाते ही मन में पहले से ही छिपे हुए काम, क्रोध आदि भाव एक एक करके तथा कभी कभी संयुक्त रूप में भी प्रकट होने लगते हैं। आवश्यक नहीं कि ये भाव विद्रोही ही हों। इनका स्वरूप प्रेम एवं मैत्रीपूर्ण भी हो सकता है। अपने प्रियजन की स्मृति, बच्चों की चिन्ता या घर के ही किसी अन्य कर्म में लगाव होने पर भी ध्यान नहीं लग पायेगा। इसलिये संसार में फैले विचारों को ध्यान में जाने से पूर्व ही समेट लीजिये। इसी के प्रतीक स्वरूप सन्ध्या में बैठते ही सर्व प्रथम सिर की चोटी में गांठ लगाई जाती है। इसका भाव यही है कि मैं अब तक बाह्य विषयों में बिखरी हुई वृत्ति को समेट कर एक स्थान पर प्रेणीभूत करता हूं। इस प्रकार जिस स्थान पर धारणा की जा रही है, केवल उसी का ध्यान, ध्यान करते समय रहेगा, अन्य का नहीं। अर्जुन को द्रौपदी के स्वयंवर में ऊपर खंभे पर बंधी कागज की मछली की आंख ही दिखाई दे रही थी, क्योंकि निशाना वहीं लगाना था। इसी प्रकार जब आपको केवल अपना लक्ष्य ही दिखलायी पड़े अन्य कुछ नहीं, तब ध्यान अवश्य ही लगेगा।

7. एक बात और भी आवश्यक रूप से समझ लेनी है कि हम लोग तुरन्त सीधे ही ध्यान में जाने का प्रयास करते हैं। सोचते हैं कि आंखें बन्द करके बैठें तथा एकदम ध्यान लग जायें। यह सम्भव नहीं। हां, बाह्य वातावरण से हटाकर उस समय थोड़ी देर तक शान्त सा रहने का अनुभव आपको होने लगेगा, किन्तु यह ध्यान नहीं है। जिस प्रकार भवन की छत पर जाकर आप शीतल वायु तथा निर्मल आकाश में विचरण करते हुए सुख का अनुभव करते हैं, बस मोक्ष भी कुछ इसी प्रकार का है। सांसारिक बन्धनों को, वासनाओं को, कार्यों को क्रमश: समाप्त करते हुए जब इस धारणा तथा ध्यान में प्रवेश करेंगे तो अगला कदम ही समाधि अर्थात् पूर्ण आनन्द का है। ठीक उसी प्रकार जैसे कि सीढ़ी के अन्तिम ऊपर वाले डण्डे से ऊपर मकान की छत ही है, जिसके ऊपर खुला एवं विस्तृत आकाश है। भवन की छत पर जाने के लिये हम क्रमश: एक एक डण्डे पर ही तो पैर रखकर ऊपर चढ़ते जाते हैं, ताकि प्रथम बार में ही बीच वाले या अन्तिम डण्डे पर पैर रख लेते है। बस, यही प्रकार हमें ध्यान में अपनाना होगा। योग दर्शन में ध्यान से पूर्व छ: अंग और भी हैं। वे इस प्रकार हैं-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार तथा धारणा। इन्हें पार किये बिना सीधे ही ध्यान में प्रवेश करना सर्वथा असम्भव है। अत: ध्यान लगाने से पूर्व योग के इन अंगों का अभ्यास भी कर लेना चाहिये तथा यह अति आवश्यक है। हमें ध्यान बहुत सरल जान पड़ता है, जबकि इन अंगों का पालन कठिन जान पड़ता है। कठिनता से सुगमता की ओर चलना मानव का स्वभाव है। इसीलिये हम केवल ध्यान की बात करते हैं, इन पूर्ववर्ती अंगों की नहीं। यदि ध्यान ही सरल होता तो पतंजलि को इन पूर्ववर्ती अंगों का उल्लेख करने की आवश्यकता ही नहीं थी। (योग दर्शन के यम नियम व्यक्ति के जीवन को नियंत्रित तथा पूर्णत: शुद्ध एवं पवित्र बनाने की परीक्षित प्रक्रिया है।) इनसे तथा आगे के अंगों आसन प्राणायाम आदि से साधक के शरीर तथा मन पूर्ण रूप से शुद्ध एवं निरोग हो जाते हैं। इसके पश्चात् ही वह धारणा में प्रवेश का अधिकारी होगा, इससे पहले नहीं। शुद्ध पवित्र मन वाला व्यक्ति ही धारणा की कोई सिद्धि कर सकता है। धारणा परिपक्व होने पर ही ध्यान में प्रवेश हो सकता है, इससे पूर्व नहीं।

सम्पादकीय

# लोहड़ी और मकर संक्रान्ति का त्यौहार

लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति का त्यौहार भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। सम्पूर्ण उत्तर भारत में इन त्यौहारों को अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खाँड के लड्डू बनाकर, जिनको तिलवे कहते हैं, दान किये जाते हैं और इष्टमित्रों में बाँटे जाते हैं। महाराष्ट्र प्रान्त में इस दिन तिलों का तिलगूल नामक हलवा बाँटने की प्रथा और सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कन्याएं अपनी सखी-सहेलियों से मिलकर उनको हल्दी, रोली तिल और गुड़ भेंट करती है। प्राचीन ग्रीक लोग भी वर-वधू की संतान वृद्धि के निमित्त तिलों का पकवान बाँटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीन काल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्ट मित्रों में भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर-संक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

भारतीय संस्कृति पर्वों और त्यौहारों की संस्कृति है। बिना त्यौहारों के भारतीय संस्कृति नीरस है। हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियों ने मनुष्य के जीवन की नीरसता को दूर करने के लिए पर्वों और त्यौहारों की संरचना की थी। ये पर्व किसी न किसी रूप में हमारे जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। कोई पर्व किसी महापुरूष से जुड़ा होने के कारण उनके जीवन का अनुकरण करने की प्रेरणा देता है तो कोई पर्व ऋतुओं के साथ जुड़ा होने के कारण प्रकृति के परिवर्तित होने की सूचना देता है तो कुछ पर्व हमारी संस्कृति व सभ्यता की झलक प्रस्तुत करते हैं। भारतीय संस्कृति में पर्वों का उद्देश्य केवल खाना-पीना और मौज-मस्ती करना नहीं है अपितु उन पर्वों से शिक्षा लेकर अपने जीवन में उमंग और उत्साह का संचार करना है। इसलिए पर्व की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए शास्त्रों में कहा गया है कि-

**पर्वति पूरयति जनानानन्देति पर्व।** अर्थात् पर्व मनुष्य को पूर्ण करता है और आनन्द से परिपूर्ण करता है। पर्व पद संस्कृतकोश में निम्नलिखित अर्थों में आता है-

**पर्व स्यादुत्सवे ग्रन्थौ प्रस्तावे विषुवादिषु।**
**दर्श प्रतिपदोः सन्धौ स्यात्तिथेः पञ्चकान्तरे।।**

इस प्रकार भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व किसी न किसी प्रकार से हमें प्रेरणा देता है और हमें आगे बढ़ने का सन्देश देते हैं।

मकर संक्रान्ति का पर्व सूर्य के उत्तरायण का प्रतीक है। छः महीने तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहा है। छः महीने तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम अयन है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को उत्तरायण और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को दक्षिणायन कहा जाता है। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखाई देता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें दिन घटता जाता है और रात्रि बढ़ती जाती है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावास, जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक दिखाई देता है। चराचर जगत शीतराज का लोहा मान रहा है। हाथ पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं- रात्रौ जानू दिवा भानुः रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य किसी कवि की यह उक्ति इस अवसर पर पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। दिन की अब तक यह अवस्था होती है कि सूर्य देव उदय होते ही अस्ताचल की ओर जाने की तैयारियां शुरू कर देते हैं। मानो दिन रात्रि में ही लीन होता जाता है। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपनी देह बढ़ाती ही चली जाती है। अन्त को उसका भी अन्त आया। आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया। आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थपर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसको देवयान कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाशमार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्सर्ग की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय कोई पर्व बनने से कैसे वंचित रह सकता था।

मकर संक्रान्ति का यह पर्व बहुत चिरकाल से मनाया जाता है। यह भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सभी प्रान्तों में इसके मनाए जाने की परिपाटी भी समान पाई जाती है। वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल(रूई) बतलाए गए हैं। जिस में तिल सबसे प्रमुख हैं। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सभी प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बना कर जिनको तिलवे कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाँटे जाते हैं। मकर संक्रान्ति के पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृतदान करने की प्रथा भी दिखाई देती है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज बढ़ाने वाला तथा अग्निदीपक कहा गया है। आर्य पर्वों पर दान, जो धर्म का एक सकन्ध है, अवश्यमेव ही कर्त्तव्य है-

**देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।**

**-गीता१७।२०**

अर्थात् देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान सात्त्विक दान कहलाता है। तथा-

**दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।**

अर्थात् हे अर्जुन! दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो। गीता के इन वचनों के अनुसार इस प्रबल शीतकाल में मकर संक्रान्ति के पहले दिन लोहड़ी मनाने का त्यौहार प्रचलित है। लोहड़ी का पर्व नवशिशु और नव दम्पत्ति के स्वागत के लिए मनाया जाता है। उस वर्ष के नव शिशु और नव दम्पत्ति का बड़े हर्ष और स्वागत के साथ इष्टमित्रों तथा बन्धु-बान्धवों के द्वारा किया जाता है। पर्व हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक होते हैं। आर्यों के पर्वों पर यज्ञ, अध्ययन और दान का विशेष रूप से सम्पादन किया जाता है, जो आर्य जनता के हृदय को आनन्द से पूरित कर देता है। यही आर्यों के पर्वों की पर्वता है। पर्व के दिन-प्रतिदिन के व्यवसायों की दौड़ धूप से अवकाश पाकर आर्य गृहों में विशेषता से आनन्दपूर्वक यज्ञ, अध्ययन और दान का अनुष्ठान किया जाता है। समस्त संसार के विद्वान् इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी जाति के पर्व उस जाति के जीवन हैं, अथवा दूसरे शब्दों में किसी जाति का अस्तित्व, उन्नति और अवनति उस के पर्वों के प्रकार से ही प्रकट होती है। जो जाति अपने पर्वों को उनके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान रखकर समुचित श्रद्धापूर्ण प्रेम और असीम उत्साह से मनाती है। उसी जाति को वस्तुतः उन्नत और उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

मकर संक्रान्ति का पर्व हमें प्रकाश के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। जिस प्रकार उत्तरायण में सूर्य के जाने से प्रकाश बढ़ता जाता है और अन्धकार घटता है उसी प्रकार हम भी तमसो मा ज्योतिर्गमय का सन्देश धारण करते हुए अपने अज्ञान को दूर करने का प्रयास करें। यही पर्वों का उद्देश्य है कि हम उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन में उन्नति करें।

**प्रेम भारद्वाज**
**संपादक एवं सभा महामन्त्री**

स्वास्थ्य चर्चा

# घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

( गतांक से आगे )

बदहजमी-तुलसी के पत्ते सूखें हुए २० ग्राम अजवायन समभाग नमक १० ग्राम तीनों को घोंटकर मिला लें। प्रात: सायं 3 ग्राम गुनगुने जल से पिलायें। पेद दर्द, अफारा, बदहजमी, खट्टी डकार, कब्ज, कै आदि के लिए रामबाण है। नजला, जुकाम, खांसी के लिए भी उत्तम औषधि है।

बगल गंध-जामुन के पत्ते पीसकर पानी में घोंटकर लगायें। रोग दूर होगा।

बल वीर्य की वृद्धि-गेहूँ का दलिया भुना हुआ २५ ग्राम मूसली सफेद का चूर्ण १० ग्राम दोनों को १ किलो गौ दुग्ध में उबालें। दलिया पकने पर उतार कर १० ग्राम मधु २० ग्राम गाय का घी मिलाकर खिलायें। १ सप्ताह प्रयोग करें अद्भुत लाभप्रद है।

गौ मूत्र-काली मिर्च मुनक्का, पिस्ते का चूर्ण बनाकर फांक लें ऊपर से दूध पियें।

बाल कल्याण-जहर मोहरा असली, कपूर कचरी दोनों समभाग मिलाकर चूर्ण कर लें। मात्रा १ ग्राम शहद के साथ दिन में ३ बार चटायें। दांत निकलने के समय होने वाले दस्तों में विशेष गुणकारी है। बच्चे को हृष्ट पुष्ट बनाती है।

बाल रोग (काली खांसी)-१. काली बकरी का दूध बल और आयु के अनुसार १०० ग्राम से २५० ग्राम तक २ सप्ताह तक पिलायें काली खांसी का नाम नहीं रहेगा।

२. छोटी पीपल का चूर्ण १ ग्राम शहद में मिलाकर घोंटकर शीशी में रख लें बालक को ३ बार दिन में चटायें। खाँसी, ज्वर, तिल्ली, अफरा, हिचकी दूर होंगी।

३. सुहागा फूला करके १० ग्राम समभाग शहद दोनों को खरल में घोंटकर शीशी में भर लें। दिन में ३ बार आधा-आधा चम्मच चटायें। बच्चों की खांसी के लिए अति लाभप्रद है।

४. बच्चों की तिल्ली के लिए छोटी पीपल १ ग्राम दूध में उबाल कर पिलायें।

५. पेट के कीड़े-अण्डी के पत्तों का रस निकालकर रुई के फाया में तर कर गुदा में रख दें। हर प्रकार के कृमि मर जायेंगे।

६. फोड़े फुन्सी-कपूर को बारीक पीसकर १ ग्राम औषधि पानी में घोलकर बच्चे को पिला दें।

७. शय्या सूत्र-त्रिफला १ किलो कूटकर ८ किलो पानी में काढ़ा करें २ किलो रहने पर छानकर फिर पकायें। गोली बनाकर रखें दो-दो गोली लें।

८. शय्या मूत्र-काले तिल ५० ग्राम, अजवायन २५ ग्राम, गुड़ १०० ग्राम पुराना तीनों मिलाकर ५ ग्राम दो बार दूध में एक माह तक पिलायें।

बल वीर्य वधर्क-मुलहठी चूर्ण, असगन्ध चूर्ण समभाग करके मिला लें। शहद के साथ ५ ग्राम की मात्रा में सेवन करें।

बालकों के फोड़े फुन्सी-कपूर बारीक पीसकर १ ग्राम दवा पानी में घोलकर पिलायें। दूसरे, तीसरे दिन पिलायें फोड़े नहीं होंगे, जो होंगे वह भी नष्ट ही जायेंगे।

बाल काले होना-१. शिकाकाई और आंवला २५, २५ ग्राम लेकर रात्रि को भिगो दें। प्रात: आंवले और शिकाकाई की गुठलियों को निकाल गूदे को पीस लें। फिर पानी मिलाकर इससे सिर धोयें। तत्पश्चात नारियल का तेल लगा दें। इससे सफेद बाल काले हो जाते हैं। जो नजले से सफेद हुये हों काले हो जाते हैं।

२. अखरोट के फल का छिलका १ किलो दूध साढ़े सात किलो अखरोट के छिलके को दूध में डालकर ५, ७ घन्टे मन्दी-मन्दी आग पर पकायें, फिर आग से उतार कर ठन्डा कर छान लें और जामुन लगा दें प्रात: इस दही में से मक्खन निकाल कर बोतल में भर लें। और प्रतिदिन बालों पर लगायें। बिना समय के पके हुए बाल काले हो जाते हैं।

बालों का उड़ना-१. वालों को उखाड़कर धूहड़ का दूध लगा देने से बाल फिर नहीं उगते।

२. कुशम्वा के तेल की मालिश करने से बाल थोड़ी देर में उड़ जाते हैं।

३. शंख भस्म ५० ग्राम, हर ताल वर्किय १० ग्राम दोनों को बारीक पीस लें। इसमें से आवश्यकतानुसार दवा लेकर पानी में मिलाकर लेप करने से बाल तुरन्त उड़ जाते हैं। इसमें सज्जी खार १० ग्राम मैलिस ५ ग्राम को शंख भस्म २० ग्राम हरताल वर्किय १ ग्राम इन सबको पानी में पीस लें। जिस स्थान के बाल उड़ाने हों वहाँ के बालों को उस्तरे से साफ करके सात दिन दवा का लेप करें। बाल जीवन भर नहीं उगेंगे।

बालों को लम्बा करना-१. नीम और बेर के पत्ते पीसकर सिर पर लगायें और दो-दो घन्टे पश्चात् सिर धो डालें। इससे बाल लम्बे हो जाते हैं।

२. कालोंजी ५० ग्राम को १ लीटर पानी में पीसकर इस पानी से प्रतिदिन सिर धोयें। एक माह में बाल काफी लम्बे हो जाते हैं।

३. कनेर के पत्ते ५० ग्राम, तेल सरसों २०० ग्राम। तेल को कढ़ाई में डालकर आग पर गर्म करें। कनेर के पत्ते इसमें डाल दें। इस तेल को इतना गर्म करें कि पत्ते जल जायें। जब पत्ते जल जायें तब उतार लें। ठन्डा होने पर छानकर शीशी में भर लें। इस तेल की सिर में मालिश करें। बाल बहुतायत से निकल कर बढ़ेंगे।

बाल झड़ना गिरना-प्याज का रस शहद दोनों को सम मात्रा में मिलाकर सिर में कुछ समय लगायें। रात्रि को लगाकर सो जायें और प्रात: धो डालें। गिरते हुये बालों को रोकने के लिए चमत्कारिक औषधि है।

बांझपन-नाग दमनी को गौ घृत में मिलाकर योनि में लेप करें वध्यत्व अति शीघ्र दूर होता है।

बिच्छू दंश-१. मूली का छिलका, मूली का पत्ता अथवा मूली का रस दंश के स्थान पर लगायें।

२. फिटकरी १० ग्राम को २० ग्राम पानी में अच्छी प्रकार मिला लें। बस दवा तैयार है। जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा है उसकी विपरीत दिशा वाली आंख में २, ३ बूँद डालें डालते ही रोता रोगी हँसने लगेगा।

३. ओंघा की जड़ को पानी में घिसकर बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से दर्द तुरन्त बन्द होता हैं।

४. निर्जली का बीज डंक वाले स्थान पर घिस कर लगायें इसे चिपका दें जहर को चूसकर ही हटेगा।

विवाई-एरन्ड की बीज की गिरी को पीसकर विवाई में लगायें शीघ्र लाभ होगा।

बुखार-१. कुटकी का चूर्ण आधा ग्राम बताशे में भरकर बुखार चढ़ने से पहले रोगी को खिला दें। सर्दी का बुखार (जाड़ा देकर आने वाला) उतर जायेगा।

२. सुदर्शन चूर्ण गर्म पानी से फांकें दूसरे दिन बुखार नहीं आयेगा। रोटी न खायें दूसरे दिन दलिया खायें। दिन में ३ बार चूर्ण लें मात्रा ३ ग्राम।

३. दाल चीनी का चूर्ण १० ग्राम आक का दूध ३ ग्राम दोनों को मिलाकर खुश्क करें। रोगी को आधा ग्राम दवा पानी के साथ दें। बुखार का रामबाण है।

भगन्दर-१. हरड़ का छिलका, बहेड़े का छिलका आबला का गूदा, पीपल छोटी, सोंठ, काली मिर्च प्रत्येक १० ग्राम शुद्ध मूलर ५० ग्राम सबको कूट पीसकर घीं में चिकना कर ३, ३ ग्राम की गोली बना लें। प्रतिदिन १ गोली गर्म जल से सेवन करायें। इससे भगन्दर, नासूर नष्ट हों जाते हैं।

२. पुराना गुड़, नीला थोथा, गन्धा विरौजा, सरेस चारों सम भाग लेकर पीस लें और पानो के छींटे देकर लेप कर दें।

मक्खी भगाना-१. हरताल पीली १० ग्राम ४०० ग्राम दूध में डालकर एक स्थान पर रख दें तमाम मक्खियाँ इसमें आ आकर मर जायेंगी।

२. कमरे में नीला थोथा पीसकर धूनी लगायें। मक्खियाँ भाग जायेंगी।

नेत्र ज्योति-काली मिर्च का चूर्ण ३ ग्राम घी या मक्खन के साव मिश्री मिलाकर खायें।

पथरी-१० ग्राम मूली का रस १० ग्राम मिश्री पीसी हुई मिला कर प्रात: सांय २ बार पिये।

प्रमेह-गाय का कच्चा दूध आधा पानी मिलाकर पियें।

पागल कुत्ता काटने पर-ओघा की जड़ का चूर्ण शहद में मिला कर १५ दिन चाटें।

पेट दर्द-खाने का सोड़ा ५ ग्राम, काला नमक २ ग्राम पानी में बालकर पियें।

भूख बढ़ाने के लिए-सैधा नमक, काला नमक, भूना हुआ जीरा सफेद, काली मिर्च २५-२५ ग्राम लेकर अलग-अलग कूट पीस छान चूर्ण कर लें और शीशी में रख लें। एक गाँठ अदरक को कूट पीस कर रस निकालें इतना ही नीबू का रस इस रस में मिला लें और शीशी के चूर्ण में से ३ ग्राम मिलाकर भोजन से आधा घन्टे पहले पी जाऐं। इससे भूख खुलकर लगेंगी।

२. २ काली मिर्च ४ नग लोंग, काला मक २ ग्राम एक कप पानी में डालकर गर्म करें। ढक्कन से ढका रहने दें। इसकी भाप न निकले जब पानी आधा रह जाये तब उतार कर थोड़ा ठन्डा करके रात के भोजन के आधा घन्टा बाद १ बार लें। १५ दिन तक पिये। इससे भूख एवं शक्ति बढ़ेगी। गैस बनना बन्द होगा खाया पिया अंग लगेंगा।

( क्रमश: )

# प्रातः काल उठो, कर्त्तव्य कर्म करो

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

वेदों में बताया गया है कि मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए सदैव रात्रि में शीघ्र शयन एवं प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठ ही जाना चाहिए। यजुर्वेद अध्याय 34 मन्त्र संख्या 35 से 39 तक पांच मन्त्रों में प्रातः शीघ्र उठकर दैनिक नित्य कर्म में लग जाने की प्रेरणा दी गई है। इन मन्त्रों के ऋषि महर्षि वसिष्ठ हैं जो वेदों के शीर्ष स्थानी ऋषि हैं। यही एक मात्र ऐसे ऋषि हैं जिनका कार्य चारों वेदों में उपलब्ध है और सर्वाधिक मन्त्रों के ऋषि भी महर्षि वसिष्ठ ही है। यदि मनुष्य ऐश्वर्य सम्पादन करना चाहता है तो इन मन्त्रों का अध्ययन तथा तदनुरूप आचरण भी करे।

**प्रातर्जितं भगमुग्रꣳहुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।**

**आध्रश्चिद्यं मन्य मानस्तुर-श्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।। यजु. 34.35**

पदार्थ-हे मनुष्यों। जैसे (वयम्) हम लोग (प्रातः) प्रभात समय (यः) जो (विधर्त्ता) विविध पदार्थों को धारण करने वाला (आध्रः) न्यायादि में तृप्ति न करने वाले का पुत्र (चित्) भी (यम्) जिस ऐश्वर्य को (मन्यमानः) विशेष कर जानता हुआ (तुरः) शीघ्रकारी (चित्) भी (राजा) शोभायुक्त राजा है (यम्) जिस (भगम्) ऐश्वर्य को (चित्) भी (भक्षि इति आह) तू सेवन कर इस प्रकार ईश्वर उपदेश करता है उस (अदितेः) अविनाशी कारण के समान माता के (पुत्रम्) पुत्र रक्षक (जितम्) अपने पुरूषार्थ से प्राप्त (उग्रम्) उत्कृष्ट (भगम्) ऐश्वर्य को (हुवेम) ग्रहण करें वैसे तुम लोग स्वीकार करो।

भावार्थ-इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमालंकार है। हे मनुष्यों। तुम लोगों को सदा प्रातः काल से लेकर सोते समय तक यथा शक्ति सामर्थ्य से विद्या और पुरूषार्थ से ऐश्वर्य की उन्नति कर आनन्द भोगना और दरिद्रों के लिए सुख देना चाहिए। यह ईश्वर की आज्ञा है।

**भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।**

**भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम।। यजु. 34.36**

**पदार्थ**-हे (भग) ऐश्वर्य शाली (प्रणेतः) पुरूषार्थ के प्रति प्रेरक ईश्वर अथवा हे (भग) ऐश्वर्य के दाता (सत्यराधः) विद्यमान पदार्थों में उत्तम धनों वाले (भग) सेवन करने योग्य विद्वान् आप (नः) हमारी (इमाम्) इस वर्तमान (धियम्) बुद्धि को (ददत्) देते हुए (उत अव) उत्कृष्टा से रक्षा कीजिए। हे (भग) विद्या ऐश्वर्य के दाता ईश्वर अथवा विद्वान्। आप (गोभिः) गौ आदि पशुओं (अश्वैः) घोड़े आदि सवारियों और (नृभि) नायक कुलनिर्वाहक मनुष्यों के साथ (नः) हमको (प्र जनय) प्रकट कीजिए। हे (भग) सेवा करते हुए विद्वान। किससे हम लोग (नृवन्तः) प्रशस्त पशुओं वाले (प्र स्याम) अच्छे प्रकार हो वैसे कीजिए।

**भावार्थ**-ईश्वर की प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि हे ईश्वर। आप सम्पूर्ण ऐश्वर्य युक्त हैं। ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए प्रेरणा देने वाले हैं। आप ही ऐश्वर्य के देने वाले भी हैं। हे प्रभो। आप हमारी वर्तमान बुद्धि की वृद्धि करते हुए उत्कृष्टता से इसकी रक्षा भी कीजिए। आप हमें गौ आदि पशुओं, घोड़े आदि सवारियों और कुल निर्वाहक कुटुम्बियों के साथ हमको प्रकाशित कीजिए। इसी प्रकार श्रेष्ठ विद्वान् से भी प्रार्थना करें कि वह हमारे परिवार के जिस ढंग से श्रेष्ठ मनुष्य बन सकें उस ढंग से उन्हें श्रेष्ठ नागारिक बना दें।

**उतोदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नम्।**

**उतेदिता मघवन्त्सूर्य्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।। यजु. 34.37**

**पदार्थ**-हे (मघवन्) उत्तम धनयुक्त ईश्वर अथवा विद्वान्। (वयम्) हम लोग (इदानीम्) वर्तमान समय में (उत्) और (प्रपित्वे) पदार्थों की प्राप्ति में (उत्) और (अह्नम्) दिनों के (मध्ये) बीच (भगवन्तः) समस्त ऐश्वर्य युक्त (स्याम) होवें। (उत) और (सुर्यस्य) सूर्य के (उदिता) उदय होते समय तथा (देवानाम्) विद्वानों की (सुमति) उत्तम बुद्धि में समस्त ऐश्वर्य युक्त (स्याम) होवें।

**भावार्थ**-हे ईश्वर। हम लोग वर्तमान समय में पदार्थों की प्राप्ति में और भविष्यत कल में और दिनों के मध्य में समस्त ऐश्वर्य प्राप्त कर लेवें और ऐश्वर्य की उन्नति से लौकिक व्यवहार बढ़ाने में प्रशंसा प्राप्त करने में समर्थ बन जावें।

**भग एव भगवाँऽअस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।**

**तं त्वा भग सर्व इज्जो हवीति स नो भग पुरएता भवेह।। यजु. 34.38**

**पदार्थ**-हे (देवाः) विद्वान् लोगों। जो (भग एव) सेवन करने योग्य ही (भगवान्) प्रशस्त ऐश्वर्य युक्त (अस्तु) होवें। (तेन) उस उत्तम ऐश्वर्य वाले परमेश्वर के साथ (वयम्) हम लोग (भगवन्तः) समग्र शोभा युक्त (स्याम) होवें। हे (भग) शोभा युक्त ईश्वर। (तम् त्वा) इन आपको (सर्व इत्) समस्त जन ही (जोहवीति) शीघ्र पुकारते हैं। हे (भग) सकल ऐश्वर्य के दाता। (सः) वह आप (इह) इस जगत् में (नः) हमारे (पुर एता) अग्रगामी (भव) होवें।

**भावार्थ**-हे विद्वान् लोगों। हम लोग परमात्मा को जो सेवन करने योग्य ऐश्वर्य है उसके समान ही उस सर्व ऐश्वर्य युक्त परमेश्वर के साथ शोभायमान होवें। हे परमात्मा समस्त प्रजा आपको ही ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए पुकारती है। हे प्रभो। आप हमारे मार्ग दर्शक बनें।

**समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय।**

**अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु।। यजु. 34.39**

**पदार्थ**-हे मनुष्यों। (उषसः) प्रभात समय (दधिक्रावेव) अच्छे चलाये धारण करने वाले घोड़े के समान (सुचये) पवित्र (पदाय) प्राप्त होने योग्य (अध्वराय) हिंसा रूप अधर्म रहित व्यवहार के लिए (सम् नमन्त) सम्यक् नमते अर्थात् सत्व गुण की अधिकता से सब प्राणियों के चित्त शुद्ध नम्र होते हैं (अश्वाः) शीघ्रगामी (वाजिनः) घोड़े जैसे (रथमिव) रमणीय यान के वैसे (नः) हमको (अर्वाचीनम्) इस समय के (वसु विदम्) अनेक प्रकार के धन प्राप्ति के हेतु (भगम्) ऐश्वर्य युक्त जन को प्राप्त करें वैसे इनको आप लोग (आ वहन्तु) अच्छे प्रकार चलावें।

**भावार्थ**-इस मन्त्र में दो उपमालंकार है। जो मनुष्य प्रातः वेला के तुल्य विद्या और धर्म का प्रकाश करते और जैसे घोड़े यानो को वैसे शीघ्र समस्त ऐश्वर्य को पहुँचाते हैं वे पवित्र विद्वान् जानने योग्य है अगला मन्त्र विदुषी स्त्रियों के लिए है। इसका भावार्थ है कि जैसे प्रभात वेला जागते हुए मनुष्यों को सुख देने वाली हैं वैसे विदुषी स्त्रियां कुमारी विद्यार्थिनी कन्याओं को विद्या सुशिक्षा और सौभाग्य को बढ़ा कर सदैव इन कन्याओं को आनन्दित किया करें।

**यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।**
**यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।**
**-यजु० ३४.३**

**भावार्थ**-हे मनुष्यो! जो अन्तःकरण, मन बुद्धि, चित्त और अहङ्काररूप वृत्तिवाला होने से चार प्रकार का है। मनन करने से मन, निश्चय करने से बुद्धि, स्मरण करने से चित्त और अहङ्कार करने से अहङ्कार कहलाता है। यह मन शरीर के भीतर प्रकाश, स्मरण, धैर्य और लज्जा आदि करने वाला और सब प्राणियों के कर्मों का साधक अविनाशी है उसको अशुभ से हटाकर अच्छे कर्मों में लगाओ और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करो कि, हे दयामय जगदीश! हमारा मन श्रेष्ठ मङ्गलमय सङ्कल्प करने वाला और आप प्रभु परमपिता परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा करने वाला हो।

# वेदों में आधुनिक विज्ञान

ले.-कृपाल सिंह वर्मा 253, शिवलोक, कंकर खेड़ा, मेरठ

( गतांक से आगे )

इतने सूक्ष्म आत्मा में 5 ज्ञानेन्द्रियां, 5 प्राण, मन तथा बुद्धि, ये बाहर शक्तियां विद्यमान होती हैं। यहां हमारा सम्बन्ध केवल चक्षु इन्द्रिय से है जिसका कार्य देखना है। प्रश्न यह है कि इतना सूक्ष्म आत्मा इतने बड़े बाह्य दृश्य किस प्रकार देख लेता है? प्रस्तुत कण्डिका में यही दर्शाया गया है।

सामान्य व्यक्ति यही मानता है कि किसी वस्तु को देखने के लिये केवल प्रकाश की आवश्यकता होती है। लेकिन ऐसा नहीं है। जिस प्रकार पूर्ण अन्धकार की स्थिति में वस्तु दिखाई नहीं देती उसी प्रकार पूर्ण प्रकाश की स्थिति में भी वस्तु दिखाई नहीं देती। जब आंखों के ऊपर टार्च का प्रकाश देते हैं तो क्या कोई वस्तु दिखाई देती है? हमारी आंखें किस दिव्य शक्ति की उपस्थिति में देखती हैं। वैदिक विज्ञान की भाषा में पूछें तो चक्षु का देवता कौन है? उत्तर है, अश्विनौ अर्थात् अन्धकार एवं प्रकाश का जोड़ा। अन्धकार एवं प्रकाश के मेल से ही किसी वस्तु का चित्र बनता है जिसे हमारी आंखें ग्रहण करती हैं। वस्तु के किसी बिन्दु पर प्रकाश अधिक होता है तो किसी पर अन्धकार अधिक होता है। प्रकाश एवं अन्धकार के मेल से ही चित्र उभरता है। अब प्रश्न यह है कि इन विशाल चित्रों को इतना सूक्ष्म आत्मा किस प्रकार ग्रहण करता है?

**1. चक्षुर्वाऽअश्विनो ग्रहः।** चक्षु आश्विनौ ग्रह की सहायता से किसी वस्तु का चित्र ग्रहण करता है।

**2. प्राणः सारस्वतो।** प्राण सारस्वत ग्रह की सहायता से संकेत भेजते हैं।

3. वागेन्द्र। वाणी इन्द्र ग्रह की सहायता से प्रकट होती है। इन्द्र का अर्थ है Electricity.

**4. आश्विनात्सारस्वतेऽ-वनपति।** आश्विन ग्रह अर्थात् प्रकाश संकेत (Photo Signals) सास्वत ग्रह अर्थात् प्राण संकेतों में बदल जाते हैं। अर्थात् आत्मा प्रकाश संकेतों को प्राण संकेतों के रूप में प्राप्त करता है।

**5. चक्षुरेवास्य तत्प्राणो संदधाति।** चक्षु सारस्वत ग्रह को प्राणों में स्थित कर देता है।

**6. सारस्वतादै्दे प्राणेनावास्य तद्वाचा संदधाति, अथः प्राणो-नास्य तद्वाचि प्रतिष्ठापयति।**

अश्विनों ग्रह की सहायता से जो चित्र चक्षु को प्राप्त कर होता है वह प्रकाशात्मक होता है। उस चित्र को आत्मा प्राणात्मक संकेतों के रूप में प्राप्त करता है। आत्मा प्राणों की सहायता से (व्यानामक प्राण के द्वारा) सारे शरीर पर नियन्त्रण रखता है। व्यान का संचार हिता नामक एक सौ एक नाड़ियों में होता है। प्रकाश तरंगें, प्राण तरंगों में बदल जाती हैं। प्राण तरंगों की सहायता से आत्मा Scanning विधि के द्वारा चित्र प्राप्त करता है। जैसा कि टी.वी. में चित्र बिन्दुवार अंकित होता है। प्रकाश एवं अन्धकार के योग से आंख के पर्दे पर बना चित्र प्राण तरंगों के द्वारा आत्मा के मानस पटल पर बिन्दुवार अंकित होता है।

**( ङ ) सोम-वैदिक विज्ञान वर्ग का एक महत्वपूर्ण शब्द**

वैदिक विज्ञान में सोम Source of Energy को कहते है।

सोम तीन प्रकार का होता है।

**द्युलोक में पाया जाने जो वाला सोमः**

सूर्य में पाया जाने वाला वह पदार्थ जिसके जलने से सूर्य लगातर ताप एवं प्रकाश दे रहा है।

सोमः पवते जनिता मतिनामः नामक ऋचा उसी का वर्णन करती है।

**अन्तरिक्ष लोक में पाया जाने वाला सोमः**

अन्तरिक्ष लोक का देवता वायु है। वायु का एक भाग सूर्य किरणों से आवेशित होकर विद्युत का निर्माण करता है। अंतरिक्ष में पाया जाने वाला वायु भी शक्ति का स्त्रोत है। इसलिए सोम है। इसी के बारे में ऋचा है- वायु सोमस्य रक्षता....।

**पृथ्वीलोक पर पाया जाने वाला सोमः**

सूर्य किरणों के पृथ्वी पर पड़ने के कारण अनेक प्रकार की औषधियां वनस्पतियां तथा अन्न उत्पन्न होता है। इन्हें पृथ्वी लोक पर पाया जाने वाला सोम कहते हैं सामवेद तथा यजुर्वेद में अनेक मन्त्रों में सोम का इस प्रकार वर्णन किया गया है।

शतपथ ब्राह्मण में एक प्रसिद्ध आख्यायिका है। गायत्री सोम को पृथ्वी पर लायी द्युलोक से। गायत्री छन्द में अग्नि का वर्णन होता है। अर्थात् अग्नि द्युलोक से सोम को लेकर पृथ्वी पर आई। जब वह सोम को ला रही थी तो एक निशानेबाज ने उसका एक पंख काट दिया अर्थात् उसकी चोंच से कुछ सोम गिर गया। शेष सोम को लेकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ी।

गायत्री सूर्य से पृथ्वी पर आने वाली अग्नि को कहते हैं। पहले पृथ्वी पर किसी प्रकार की कोई वनस्पति नहीं थी। कालान्तर से सूर्य किरणों के पृथ्वी पर पड़ने पर ही वनस्पति, औषधि तथा अन्न पृथ्वी पर उत्पन्न हुए। ये सब पृथ्वी लोक में सोम है। इन्हें सूर्य से आने वाली अग्नि अर्थात् गायत्री लायी है। वह निशानेबाज जिसने गायत्री को तीर मारा वह अन्तरिक्ष में पाये जाने वाला वायु ही है क्योंकि सूर्य से आने वाली अग्नि अर्थात् किरणें वायुमण्डल में पाये जाने वाले जल अशुओं को आवेशित कर इन्द्र अर्थात् विद्युत का निर्माण करते हैं।

वेदों में वैज्ञानिक घटनाओं का वर्णन आख्यायिकाओं के रूप से है। पुराणों में इनका वास्तविक रूप से वर्णन किया गया है।

जब मन रूपी समुद्र को बुद्धि रूपी मथनी से मथा जाता है तो ज्ञान प्रकट होता है। इससे धन अर्थात् लक्ष्मी प्राप्त होती है इससे ही अमृत अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है। क्योंकि ''ज्ञानात् मुक्ति''। परन्तु पुराणों में इस घटना को ऐतिहासिक बना दिया गया है। इस कारण वैदिक विज्ञान लुप्त हो गया।

# ईश्वर है एक, नाम अनेक

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज
१८० महात्मा गान्धी रोड़, ( दो तल्ला ) कोलकत्ता-700007

यह लेख मैंने आर्य मान्यताएँ शीर्षक पुस्तक जिसके सम्पादक आचार्य राजवीर जी शास्त्री हैं और प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट है, उससे किया है जो अति पठनीय है तथा पाठकों के लिए अति जानकारी का विषय है। पाठक गण इस लेख को पढ़कर काफी ज्ञान वर्द्धन करेंगे। इसी उद्देश्य से यह लेख लिया है।

ईश्वर एक है, अनेक नहीं-वेद और वेदानुकूल सभी ग्रन्थों में ऐसा ही लिखा है। एक ईश्वर ही अनेक नामों से पुकारा जाता है। प्रत्येक नाम उसके किसी न किसी गुण को प्रकट करता है। जैसे-

ब्रह्म=सबसे बड़ा।

ब्रह्मा=सब जगत् को बनाने वाला।

शिव=कल्याण स्वरूप और कल्याण करने वाला।

विष्णु=चर और अचर सब जगत् में व्यापक।

रूद्र=दुष्ट कर्म करने वालों को दण्ड देकर रूलाने वाला।

गणेश=सब का स्वामी और पालन करने वाला।

पिता=सब की पालना और रक्षा करने वाला।

देव=विद्वान् और विद्या आदि देने वाला।

यम=सब प्राणियों को न्यायपूर्वक यथायोग्य कर्मफल देने वाला।

भगवान्=ऐश्वर्यवान्।

चन्द्र=आनन्द स्वरूप और सब को आनन्द देने वाला।

ओ३म्= यह शब्द तीन अक्षरों अ, उ, म् से बना है। अ+उ=ओ। ओ और म् के बीच में लिखा ''३''। ओम् के उच्चारण को लम्बा करने का निर्देश देता है।

अ=विराट्, अग्नि, विश्व आदि।

उ=हिरण्य गर्भ, वायु, तैजस आदि।

म्=ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ आदि।

विराट्=जो बहुत प्रकार के जगत् को प्रकाशित करे।

अग्नि=ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञ।

विश्व=जो आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु में प्रविष्ट हुआ है।

हिरण्य गर्भः जो सूर्य आदि तेज वाले पदार्थ का उत्पत्ति तथा निवास स्थान है।

वायु=जो सब चराचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता है।

तैजस=जो स्वयं प्रकाश स्वरूप तथा सूर्य आदि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है।

ईश्वर=सामर्थ्यवान्।

आदित्य=जिसका विनाश कभी न हो।

प्राज्ञ=जो सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है।

ईश्वर के सब नामों में ''ओम्'' सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इससे उसके सबसे अधिक गुण प्रकट होते हैं। यही ईश्वर का प्रधान और निज नाम है। अन्य सभी नाम गौण हैं।

ओ३म् एवं ब्रह्म। (यजुर्वेद ४०,१८)

अर्थ-आकाश के समान व्यापक, सबसे बड़ा, सब जगत् का रक्षक ओ३म् है।

ओ३म्क्रतोस्मर। (यजुर्वेद)

अर्थः ऐ कर्मशील मनुष्य! ओ३म् को याद रख।

ओम् इति एतद् अक्षरम् उद्गीथम् उपासीतः। छान्दोग्यो-पनिषद्

अर्थ-ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, और किसी की नहीं।

ओम् इति एतद् अक्षरम् इदम् सर्वं तस्य उपव्याख्यानम्।

(माण्डूक्योपनिषद्)

अर्थ-वेदादि सब शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम ''ओम्'' को कहा गया है।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमी ओम् इति एतत्।।

(कठोपनिषद्)

अर्थ-सारे वेद जिस पद का वर्णन करते हैं, जिसे जानने के लिए सब तप किए जाते हैं, जिसकी चाहना में यति लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं,

वह पद संक्षेप में तुझे बताता हूँ, वह पद ''ओम्'' है।

इन मन्त्रों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि ईश्वर का मुख्य और निज नाम ''ओ३म्'' है। अन्य नामों को छोड़कर ''ओ३म् की ही उपासना करनी चाहिए।

# हे जीव! तू सूर्य और चन्द्र के समान निर्भय बन

ले.-डा. अशोक आर्य 1/61 रामप्रस्थ ग्रीन सैक्टर 7 वैशाली

इस सृष्टि में सूर्य और चन्द्रमा दो ऐसी शक्तियां हैं जो कभी किसी से भयभीत नहीं होतीं। सदैव निर्भय होकर अपने कर्त्तव्य की पूर्ति में लगी रहती हैं। यह सूर्य और चन्द्र निर्बाध रूप से निरन्तर अपने कर्त्तव्य पथ पर गतिशील रहते हुये इस समग्र संसार को प्रकाशित करते हैं। इतना ही नहीं ब्राह्मण और क्षत्रिय ने भी कभी किसी के आगे पराजित होना स्वीकार नहीं किया। विजय प्राप्त करने के लिये वह सदा संघर्षशील रहे हैं। जिस प्रकार यह सब कभी पराजित नहीं होते उस प्रकार ही हे प्राणी, तू भी निरन्तर अपने कर्त्तव्य पथ पर बढ़, कभी स्वप्न में भी पराजय का वर्णन मत कर। इस तथ्य को अथर्ववेद के मंत्र संख्या 2/15/3,4 में इस प्रकार कहा है:

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च, न विभितो न रिष्यत:।

एवा में प्राण मांविभे।।

**अथर्ववेद 2/15/3**

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च, न विभितो न रिष्यत।

एवा में प्राण मांविभे।।

**अथर्ववेद 2/15/4**

यह मंत्र मानव मात्र को निर्भय रहने की प्रेरणा देता है। मंत्र कहता है कि हे मानव, तू सदा अपने जीवन में निर्भय होकर रह। किसी भी परिस्थिति में कभी भी भयभीत न हो। मंत्र एतदर्थ उदाहरण देते हुये कहता है कि जिस प्रकार कभी किसी से न डरने के कारण ही सूर्य और चन्द्र कभी नष्ट नहीं होते जिस प्रकार ब्रह्म शक्ति तथा क्षात्र शक्ति भी कभी किसी से न डरने के कारण ही कभी नष्ट नहीं होती। जब यह निर्भय होने से कभी नष्ट नहीं होते तो तू भी निर्भय रहते हुये नष्ट होने से बच।

हम डरते हैं, डर क्या है? भयभीत होते हैं, भय क्या है? जब हम मानसिक रूप से किसी समय शंकित होकर कार्य करते हैं इसे ही भय कहते हैं। स्पष्ट है कि मनोशक्ति का ह्रास ही भय है। किसी प्रकार की निर्बलता, किसी प्रकार की शंका ही भय का कारण होती है। जो हमें कर्त्तव्य पथ से च्युत कर भयभीत कर देती है। इससे मनोबल का पतन हो जाता है तभा भयभीत मानव पराजय की ओर अग्रसर होता है। मनोबल क्यों गिरता है, इसके गिरने का कारण होता है पाप, इसके गिरने का कारण होता है अनाचार, इसके गिरने का कारण होता है मानसिक दुर्बलता। जो प्राणी मानसिक रूप से दुर्बल होता है वह ही लोभ में फंस कर अनाचार करता है, पाप करता है, अपराध करता है, अपनी ही दृष्टि में गिर जाता है, संसार में सम्मानित कैसे होगा? कभी नहीं हो सकता।

मेरे अपने जीवन में एक अवसर आया। मेरे पांव में चोट लगी थी। इस अवस्था में भी मैं अपने निवास के ऊंचे दरवाजे पर प्रतिदिन अपना स्कूटर लेकर चढ़ जाता था। चढ़ने का मार्ग अच्छा नहीं था। एक दिन स्कूटर चढ़ाते समय मन में आया कि आज मैं न चढ़ पाउंगा, गिर जाउंगा। अत: शंकित मन ऊपर जाने का साहस न कर पाया तथा मार्ग से ही लौट आया। पुन: प्रयास किया किन्तु भयभीत मन ने फिर न बढ़ने दिया। तीसरी बार प्रयास कर आगे बढ़ा तो गिर गया। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि जब भी कोई कार्य भ्रमित अवस्था में किया जाता है तो सफलता नहीं मिलती। इसलिये प्रत्येक कार्य निर्भय मन से करना चाहिये सफलता निश्चय ही मिलेगी। प्रत्येक सफलता का आधार निर्भय ही होता है।

हम जानते हैं कि मनोबल गिरने का कारण दुर्विचार अथवा पापाचरण ही होते हैं। जब हमारे हृदय में पापयुक्त विचार पैदा होते हैं, तब ही तो हम भयभीत होते हैं। जब हम किसी का बुरा करते हैं तब ही तो हमें भय सताने लगता है कि कहीं उसे पता चल गया तो हमारा क्या होगा? इससे स्पष्ट होता है कि छल पाप तथा दोषपूर्ण व्यवहार से मनोबल गिरता है जिससे भय की उत्पति होती हैं तथा यह भय ही है जो हमारी पराजय का कारण बनता है। जब हम निष्कलंक हो जावेंगे तो हमें किसी प्रकार का भय नहीं सता सकता।

जब हम निष्पाप हो जावेंगे तो हमें किसी प्रकार से भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं रहती। जब हम निर्दोष व्यक्ति पर अत्याचार नहीं करते तो हम किस से भयभीत हों? जब हम किसी का बुरा चाहते ही नहीं तो हम इस बात से भयभीत क्यों हों कि कहीं कोई हमारा बुरा न कर दे, अहित न कर दे। यह सब तो वह व्यक्ति सोच सकता है जिसने कभी किसी का अच्छा किया ही नहीं, सदा दूसरों के धन पर, दूसरों की सम्पत्ति परअधिकार करता रहता है। भला व्यक्ति न तो ऐसा सोच सकता है तथा न ही भयभीत हो सकता है।

इसलिये ही मंत्र में सूर्य तथा चन्द्रमा का उदाहरण दिया है। यह दोनों सर्वदा निर्दोष हैं। इस कारण सूर्य व चन्द्रमा को कभी कोई भय नहीं होता। वह यथावत अपने दैनिक कार्य में व्यस्त रहते हैं। उन्हें कभी कोई बाधा नहीं होती। इससे यह तथ्य सामने आता है कि निर्दोषता ही निर्भयता का मार्ग है, निर्भयता की चाबी है, कुंजी है। अत: यदि हम चाहते हैं कि हम जीवन पर्यन्त निर्भय रहे तो यह आवश्यक है कि हम अपने पापों व अपने दुर्गुणों का त्याग करें। पापों, दुर्गुणों को त्यागने पर ही हमें यह संसार तथा यहां के लोग मित्र के समान दिखाई देंगे। जब हमारे मन ही मालिन्य से दूषित होंगे तो भय का वातावरण हमें हमारे मित्रों को भी शत्रु बना देता है क्योंकि हमें शंका बनी रहती है कि कहीं वह हमारी हानि न कर दें। इसलिये हमें निर्भय बनने के लिये पाप का मार्ग त्यागना होता, छल का मार्ग त्यागना होगा तथा सत्य पक्ष को अपनाना होगा। यही सत्य है, यही निर्भय होने का मूल मंत्र है, जिसकी ओर मंत्र हमें ले जाने का प्रयास कर रहा है।

वेद कहता है कि मित्र व शत्रु, परिचित व अपरिचित, ज्ञात व अज्ञात, प्रत्यक्ष व परोक्ष, सबसे हम निर्भय रहें। इतना ही नहीं सब दिशाओं से भी निर्भय रहें। जब सब और से हम निर्भय होंगे तो सारा संसार हमारे लिये मित्र के समान होगा। अत: संसार को मित्र बनाने के लिये आवश्यक है कि हम सब प्रकार के पापों का आचरण त्यागें तथा सब को मित्र भाव से देखें तो संसार भी हमें मित्र समझने लगेगा। जब संसार के सब लोग हमारे मित्र होंगे तो हमें भय किससे होगा? अर्थात हम निर्भय हो जावेंगे। इस निमित वेदोपदेश का पालन आवश्यक है।


## वर्ष 2019 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2019 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य पांच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

**प्रेम भारद्वाज**
**सभा महामंत्री**

# आर्य समाज फरीदकोट में विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट में त्रिदिवसीय महोत्सव के अन्तिम दिन समारोह के मुख्यातिथि श्री सत्य प्रकाश उप्पल जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के अधिकारी। चित्र दो में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुये आर्य समाज के मंत्री श्री सतीश शर्मा जी एवं चित्र तीन में इस अवसर पर उपस्थित आर्य जन।

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट के भव्य प्रांगण में त्रिदिवसीय महोत्सव समारोह का समापन धूमधाम से हुआ। प्रात: 8 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात सुश्री सुमेधा, डा. विशेष कोटकपूरा की बहू रिक्कू वर्मा ने भजन प्रस्तुत किया। वैदिक प्रवक्ता राजू वैज्ञानिक दिल्ली ने स्वामी दयानन्द जी के विचारों और सिद्धान्तों की प्रेरणा देने वाले आदर्शों पर चलने के लिये अनेक प्रकार की रोचक घटनाएं प्रस्तुत की। उन्होंने आर्य बनने के लिये श्रेष्ठ गुणों और संस्कारों को धारण करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर कसकर विवेकपूर्ण ढंग से मानता है। वह न अन्धविश्वास की परम्पराओं का समर्थक है, न लकीर का फकीर बनने में विश्वास रखता है और न ही वह आधुनिक चकाचौंध में बहता है। सभी बातें सत्य और असत्य को विचार कर करना ही आर्य समाज का ध्येय और उद्देश्य है। आर्य समाज सब अच्छाईयों को मानता और स्वीकार करता है। वह रूढ़िवाद व दकियानूसी विचारधाराओं का परित्याग करने का आग्रह करता है तथा संकीर्णता का प्रबल विरोधी रहा है। आर्य समाज की मान्यताएं वेदों पर आधारित होने से सनातन और शाश्वत हैं। साथ ही देश काल परिस्थिति के अनुसार आर्य समाज सामयिक सुधारों को भी महत्व देता है। उन्होंने कहा कि वेद और वेदानुकूल सभी ग्रन्थों में ऐसा ही लिखा है। एक ही ईश्वर को अनेक नामों से अर्थात् उसके गुण, कर्म, स्वभाव के आधार से पुकारा जाता है। आर्य समाज के दूसरे नियम में परमात्मा सत् चित् और आनन्दस्वरूप है। वह निराकार सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालू, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। पंचमहाभूत अर्थात् पृथिवी, आकाश, वायु, अग्नि, जल और संसार का कोई भी महापुरूष उपास्य देव नहीं है। प्रकृति से बने पदार्थ और कोई जीव-जन्तु उपास्य देव नहीं है। इसके पश्चात आचार्य दिवाकर भारती जोकि तीनों दिन यज्ञ ब्रह्मा के रूप में उपस्थित रहे, उनका सम्मान किया गया। तत्पश्चात वैदिक प्रवक्ता राजू वैज्ञानिक का सम्मान किया गया। इसके बाद श्री भीष्म आर्य जी और उनके सहयोगी ढोलक वादक श्री नेत्रपाल आर्य जी को भी सम्मानित किया गया। इस समारोह के मुख्यातिथि श्री सत्य प्रकाश उप्पल ने यज्ञ के प्रति विशेष श्रद्धा रखने वाली सुश्री रक्षिता देवगण और भुवनेश शर्मा जी को सम्मानित किया। इस अवसर पर डा. निर्मल कौशिक सेवा मुक्त प्राध्यापक को उनके उत्कृष्ट साहित्य सेवाओं के प्रति तथा स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने के लिये विशेष रूप से आर्य साहित्य सम्मान प्रदान किया गया।

आर्य समाज प्रबन्ध समिति की ओर से समारोह के मुख्यातिथि श्री सत्य प्रकाश उप्पल जी को सम्मानित किया गया। इसके पश्चात उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिला से पधारे श्री भीष्म आर्य जी ने अपने मधुर भजनों द्वारा सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने वैदिक भजन प्रस्तुत कर सभी का मन जीत लिया। सम्मान समारोह में विशेष रूप से आर्य समाज के प्रति सेवा निभाने वाले आर्य समाज फरीदकोट के मंत्री श्री सतीश शर्मा जी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज मेन बाजार फरीदकोट की तरफ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को 5100 रुपये की राशि वेद प्रचार भेंट की गई। श्री ओम प्रकाश छाबड़ा, श्री ललित बजाज, डा. देवराज कोटकपूरा, आचार्य महावीर शास्त्री मानसा, श्री मदन मोहन देवगण फरीदकोट, श्रीमती सुमन मल्होत्रा प्रधान आर्य समाज मोगा, श्री मनोज आर्य फिरोजपुर, आर्य समाज के पुरोहित श्री कमलेश शास्त्री जी को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री जगदीश वर्मा, श्री प्रमोद कुमार गोयल, श्री आशीष गोयल, अमन शर्मा, संदीप शर्मा, नरेश देवगण, श्रीमती सुधा शर्मा, श्रीमती तरसेम शर्मा, शान्ति देवगण, श्रीमती कृष्णा, कौशल्या शर्मा, श्रीमती पुष्पा वर्मा, श्रीमती विमला वर्मा, श्री बनारसी दास, डा. हरीश अरोडा, अविनाश मोदगिल, सतीश सेठी, वीरेन्द्र साहनी, प्रो. एम.के. गुप्ता विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री कपिल सहूजा एडवोकेट एवं आर्य समाज के मंत्री सतीश शर्मा जी ने आए हुये आर्यजनों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर आर्य समाज की तरफ से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई थी। यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। इस कार्यक्रम में आर्य समाज मोगा, आर्य समाज फिरोजपुर, आर्य समाज जीरा, आर्य समाज कोटकपूरा, आर्य समाज मानसा, आर्य समाज जैतों का विशेष सहयोग रहा।

**सतीश शर्मा मंत्री आर्य समाज**

# आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर ने गरीब स्कूली बच्चों को बूट बांटे

आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में यज्ञ किया गया। श्री विपिन धवन जी ने यजमान पद को सुशोभित किया। आज उनका जन्म दिवस भी था तथा डा. विनोद मेहता जी ने बड़ी श्रद्धापूर्वक वैदिक रीति से यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ उपरान्त डा. विनोद मेहता ने विपिन धवन जी को उनके जन्म दिवस की शुभकामनाएं देते हुये उन्हें आशीर्वाद भी दिया। उन्होंने कहा कि हमें यज्ञ प्रतिदिन करना चाहिये। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जहां पर किसी के साथ कोई भेदभाव न हो। जाति, मत, पन्थ और सम्प्रदाय की तरह कोई व्यवहार न करे। सभी समान विचार वाले होकर सबके कल्याण के लिए मिलकर कार्य करें। समान विचार वाले होकर राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करें। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने द्वारा स्थापित समाज को आर्य समाज का नाम दिया। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ होता है अर्थात् जिनके विचार शुद्ध, आचार शुद्ध, व्यवहार और खान-पान शुद्ध होता है वही व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है। उन्होंने कहा कि मेरी हार्दिक इच्छा है कि हमारी समाज में प्रतिदिन हवन हो और मैंने प्रण लिया है कि यह काम तथा मेरा यह सपना अवश्य ही पूरा होगा। हवन के उपरान्त सरकारी स्कूल में जाकर डा. विनोद मेहता ने गरीब बच्चों को बूट तथा टोपियां बांटी गई। यह सारा खर्च धवन परिवार ने दिया। डा. मेहता ने कहा कि हमें अपना जन्म दिवस इसी प्रकार से मनाना चाहिये। उन्होंने बच्चों को अपने चरित्र विकास पर जोर देने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि चरित्र के विकास के लिए इच्छा शक्ति का होना बहुत आवश्यक है। जिसमें इच्छा शक्ति का अभाव होता है, वह व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता। जो अपने संकल्पों पर दृढ़ नहीं रह सकता, जिसका अपना कोई स्थाई सिद्धान्त नहीं होता, जो अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं करता, उस व्यक्ति में इच्छा शक्ति का अभाव होता है। ऐसे मनुष्य किसी भी बड़े कार्य को करने में अक्षम होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी का भला नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्तियों से अपना भला नहीं होता तो वे समाज का क्या भला कर सकते हैं।

आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर द्वारा गत दिनों डा. विनोद मेहता के नेतृत्व में सरकारी स्कूल में जाकर गरीब बच्चों को बूट एवं टोपियां बांटी गई। जबकि चित्र दो में विपिन धवन जी के जन्म दिवस पर आशीर्वाद देते हुये डा. विनोद मेहता।

एक चरित्रवान व्यक्ति के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना आवश्यक है। बालकों को अपना निर्माण करने का अवसर देना चाहिए। जो लोग उन्हें अपना आत्मनिर्माण करने का मौका नहीं देते, कठिनाईयों को सहन करने का अवसर नहीं देते, ऐसे लोग उनके चरित्र विकास तथा उन्नति में सबसे बड़े बाधक बनते हैं। हवन के पश्चात सभी को प्रसाद बांटा गया।

**मंत्री आर्य समाज**

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।